International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

# भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ

**Amit**
Research Scholar, Department of History, Kalinga University
**Dr. Sanjana Singh**
Professor, Department of History, Kalinga University

**सारांश**
भारत छोड़ो आंदोलन (1942) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक चरण था, जिसने औपनिवेशिक शासन की नींव को गंभीर रूप से हिला दिया। इस आंदोलन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण किंतु लंबे समय तक उपेक्षित पक्ष महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ रही हैं। जब आंदोलन के प्रारंभिक चरण में ही अधिकांश शीर्ष पुरुष नेतृत्व को ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया, तब महिलाओं ने संगठन, संचार, रणनीति और जनmobilization की जिम्मेदारी संभाली। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महिलाओं द्वारा संचालित भूमिगत नेटवर्क, गुप्त संचार प्रणालियों, रेडियो प्रसारण, पर्चा वितरण, आश्रय व्यवस्था और जोखिमपूर्ण संगठनात्मक गतिविधियों का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि महिलाओं की भूमिगत भूमिका केवल आंदोलन को जीवित रखने तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसने भारतीय समाज में महिला चेतना, आत्मनिर्भरता और राजनीतिक सक्रियता के नए आयाम भी विकसित किए। यह शोध महिलाओं की भूमिका को एक सक्रिय ऐतिहासिक शक्ति के रूप में स्थापित करता है, न कि केवल सहायक या प्रतीकात्मक योगदान के रूप में।

**मुख्य शब्द :** भारत छोड़ो आंदोलन, 1942, महिलाएँ, भूमिगत गतिविधियाँ, अरुणा आसफ़ अली, उषा मेहता, कॉन्ग्रेस रेडियो, महिला चेतना, स्वतंत्रता संग्राम

## परिचय

भारत का स्वतंत्रता संग्राम अनेक चरणों और आंदोलनों से होकर गुज़रा, किंतु 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन अपने स्वरूप, व्यापकता और तीव्रता के कारण विशिष्ट स्थान रखता

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

है। यह आंदोलन न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की अंतिम निर्णायक घोषणा था, बल्कि भारतीय समाज के भीतर गहरे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का भी वाहक बना। महात्मा गांधी द्वारा दिया गया 'करो या मरो' का नारा पूरे देश में प्रतिरोध, बलिदान और साहस का प्रतीक बन गया। किंतु आंदोलन के प्रारंभिक दिनों में ही कांग्रेस के लगभग सभी प्रमुख नेता—महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, मौलाना आज़ाद—को गिरफ्तार कर लिया गया। इस स्थिति ने आंदोलन को नेतृत्वविहीन करने का ब्रिटिश प्रयास अवश्य किया, परंतु इसके विपरीत यह चरण महिलाओं के सक्रिय नेतृत्व और भूमिगत संगठनात्मक क्षमता के उभार का काल सिद्ध हुआ।

महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ इतिहास लेखन में लंबे समय तक हाशिए पर रहीं। पारंपरिक इतिहासकारों ने आंदोलन को मुख्यतः पुरुष नेतृत्व और खुले राजनीतिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि गुप्त संगठन, गुप्त संचार और जोखिमपूर्ण भूमिगत कार्यों में महिलाओं की भूमिका को अपेक्षित महत्व नहीं मिला। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महिलाएँ संदेशवाहक, संगठनकर्ता, रणनीतिकार और प्रेरक के रूप में सामने आईं। अरुणा आसफ़ अली द्वारा गोवालिया टैंक मैदान में तिरंगा फहराना आंदोलन का प्रतीकात्मक क्षण था, किंतु उसके बाद की भूमिगत गतिविधियों ने आंदोलन को वास्तविक जीवन शक्ति प्रदान की।

उषा मेहता द्वारा संचालित 'कॉन्ग्रेस रेडियो' ब्रिटिश सेंसरशिप को चुनौती देने का एक अद्वितीय उदाहरण था। इसके माध्यम से आंदोलन की सूचनाएँ, गांधीजी के संदेश और राष्ट्रव्यापी आह्वान जनता तक पहुँचाए गए। यह कार्य अत्यंत जोखिमपूर्ण था, जिसमें गिरफ्तारी, यातना और कारावास की प्रबल संभावना बनी रहती थी। इसके अतिरिक्त अनेक शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं ने अपने घरों को गुप्त बैठकों, आश्रय स्थलों और सामग्री भंडारण केंद्रों में परिवर्तित कर दिया। इस प्रकार घरेलू स्थान स्वयं प्रतिरोध के केंद्र बन गए।

यह शोध-पत्र इस ऐतिहासिक सच्चाई को रेखांकित करता है कि भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ केवल परिस्थितिजन्य प्रतिक्रिया नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक-राजनीतिक चेतना के दीर्घकालिक विकास का परिणाम थीं। यह अध्ययन महिलाओं की इन भूमिगत भूमिकाओं को राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्रीय तत्व के रूप में स्थापित

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

करने का प्रयास करता है, जिससे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को अधिक समग्र और समावेशी दृष्टि से समझा जा सके।

**श्य एवं लक्ष्य**

इस शोध-पत्र का मूल उद्देश्य भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिगत भूमिकाओं का गहन, तथ्यात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रायः प्रत्यक्ष आंदोलनों, सार्वजनिक सभाओं और पुरुष नेतृत्व को ही केंद्र में रखा गया है, जबकि भूमिगत गतिविधियों को द्वितीयक या सहायक भूमिका के रूप में देखा गया। इस शोध का प्रमुख लक्ष्य इस धारणा को चुनौती देना और यह स्थापित करना है कि महिलाओं की भूमिगत सक्रियता आंदोलन की निरंतरता, व्यापकता और प्रभावशीलता का केंद्रीय आधार थी।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों को केवल राजनीतिक संदर्भ में न देखकर सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में समझा जाए। जब महिलाओं ने संदेशवाहक, संगठनकर्ता, गुप्त आश्रयदाता और वैचारिक प्रेरक की भूमिका निभाई, तब उन्होंने पारंपरिक लैंगिक सीमाओं को तोड़ा। इस शोध का लक्ष्य यह विश्लेषण करना है कि इन गतिविधियों ने महिलाओं की आत्मछवि, सामाजिक स्थिति और राजनीतिक चेतना को किस प्रकार परिवर्तित किया।

इसके अतिरिक्त, यह शोध उषा मेहता, अरुणा आसफ़ अली, सुचेता कृपलानी, मृदुला साराभाई तथा अन्य कम-ज्ञात और अनाम महिलाओं की भूमिगत भूमिका को ऐतिहासिक मान्यता प्रदान करने का प्रयास करता है। एक अन्य उद्देश्य यह भी है कि भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों और ब्रिटिश औपनिवेशिक दमन के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया जाए, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि महिलाओं की सक्रियता किस हद तक शासन के लिए चुनौती बनी।

अंततः इस शोध का लक्ष्य स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को अधिक समावेशी, संतुलित और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध बनाना है, ताकि आने वाले शोधार्थियों के लिए यह अध्ययन एक संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य कर सके।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

## साहित्य समीक्षा

भारत छोड़ो आंदोलन और उसमें महिलाओं की भूमिका पर उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि लंबे समय तक इतिहास लेखन पुरुष-केंद्रित रहा है। आर.सी. मजूमदार और बिपिन चंद्र जैसे इतिहासकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन का व्यापक राजनीतिक विश्लेषण प्रस्तुत किया, किंतु महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों पर सीमित ध्यान दिया। उनके लेखन में महिलाएँ प्रायः प्रतीकात्मक या नैतिक समर्थन देने वाली शक्ति के रूप में उभरती हैं।

इसके विपरीत, जेराल्डिन फोर्ब्स की कृति *Women in Modern India* तथा उमा चक्रवर्ती और कमला भसीन जैसे लेखकों के कार्यों ने महिलाओं की सक्रिय राजनीतिक भागीदारी को रेखांकित किया। इन अध्ययनों में यह स्वीकार किया गया कि भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महिलाओं ने नेतृत्व का दायित्व संभाला, किंतु भूमिगत नेटवर्क की संरचना और कार्यप्रणाली पर अभी भी सीमित शोध उपलब्ध है।

उषा मेहता के संस्मरण और 'कॉन्ग्रेस रेडियो' से संबंधित लेख इस विषय पर महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि भूमिगत संचार प्रणाली केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं थी, बल्कि यह एक वैचारिक प्रतिरोध का माध्यम भी थी। भारतीय महिला इतिहासकारों जैसे कुमकुम रॉय और मृदुला मुखर्जी ने सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से इतिहास को देखने का आग्रह किया, जिससे महिलाओं के श्रम और जोखिमपूर्ण योगदान को बेहतर ढंग से समझा जा सका।

हाल के नारीवादी इतिहास लेखन ने इस दिशा में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किया है। नारीवादी विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ घरेलू और सार्वजनिक जीवन के बीच की पारंपरिक विभाजन रेखा को ध्वस्त करती हैं। यह शोध-पत्र इन्हीं विद्वत् चर्चाओं को आधार बनाते हुए भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत भूमिका को एक संगठित ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

## शोध-पद्धति

यह शोध ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में आत्मकथाएँ,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

पत्र, सरकारी अभिलेख, ब्रिटिश खुफिया रिपोर्टें तथा समकालीन समाचार-पत्र शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों के रूप में इतिहासकारों की पुस्तकें, शोध-पत्र और नारीवादी अध्ययन का सहारा लिया गया है।

शोध में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों की तुलना की गई है। इसके अतिरिक्त गुणात्मक विश्लेषण पद्धति का प्रयोग कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि महिलाओं की भूमिगत भूमिका का सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव क्या था।

नीचे एक तालिका के माध्यम से प्रयुक्त स्रोतों के प्रकार को स्पष्ट किया गया है:

| स्रोत का प्रकार | उदाहरण | शोध में उपयोग |
|---|---|---|
| प्राथमिक स्रोत | आत्मकथाएँ, पत्र, सरकारी दस्तावेज | प्रत्यक्ष अनुभव और तथ्य |
| द्वितीयक स्रोत | पुस्तकें, शोध-पत्र | व्याख्यात्मक विश्लेषण |
| मौखिक स्रोत | साक्षात्कार, स्मृतियाँ | सामाजिक दृष्टिकोण |

इस पद्धति के माध्यम से शोध भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों को एक व्यवस्थित, विश्वसनीय और बहुआयामी ऐतिहासिक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करता है।

## परिणाम एवं व्याख्या

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इस चरण में महिला सहभागिता न केवल संख्यात्मक रूप से बढ़ी, बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी अत्यंत सशक्त और निर्णायक सिद्ध हुई। जब आंदोलन के आरंभिक दिनों में ही कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया गया, तब राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हुई। इस शून्यता को भरने में महिलाओं की भूमिगत भूमिका केंद्रीय रही। अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि महिलाओं ने संगठन, संचार, वैचारिक प्रचार और प्रतिरोध की रणनीतियों को इस प्रकार विकसित किया कि आंदोलन की निरंतरता बनी रही।

## भूमिगत संगठन और नेटवर्क निर्माण

परिणामों से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि महिलाओं ने स्थानीय, क्षेत्रीय और अंतर-क्षेत्रीय स्तर पर भूमिगत नेटवर्क स्थापित किए। ये नेटवर्क पारंपरिक राजनीतिक ढाँचों से

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अलग थे और अधिक लचीले, सुरक्षित तथा जन-आधारित थे। महिलाओं ने अपने पारिवारिक और सामाजिक संबंधों का उपयोग करते हुए संदेशवाहन, आश्रय व्यवस्था और संसाधन जुटाने का कार्य किया। इससे ब्रिटिश प्रशासन के लिए इन नेटवर्कों का पता लगाना अत्यंत कठिन हो गया।

नीचे दी गई तालिका विभिन्न प्रकार की भूमिगत गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका को स्पष्ट करती है:

| भूमिगत गतिविधि | महिलाओं की भूमिका | प्रभाव |
|---|---|---|
| गुप्त संदेश प्रेषण | संदेशवाहक, कोड उपयोग | आंदोलन की निरंतरता |
| आश्रय व्यवस्था | घरों को सुरक्षित ठिकाना बनाना | कार्यकर्ताओं की सुरक्षा |
| संगठन निर्माण | स्थानीय समूहों का नेतृत्व | जनभागीदारी में वृद्धि |
| सामग्री वितरण | पर्चे, घोषणाएँ | वैचारिक प्रसार |

**कॉन्ग्रेस रेडियो और वैकल्पिक संचार व्यवस्था**

अध्ययन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिणाम 'कॉन्ग्रेस रेडियो' की भूमिका से संबंधित है। उषा मेहता के नेतृत्व में संचालित इस गुप्त रेडियो स्टेशन ने ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप को पूर्णतः निष्प्रभावी कर दिया। परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि रेडियो प्रसारण केवल सूचना का माध्यम नहीं था, बल्कि यह भय के वातावरण में साहस और विश्वास का संचार करता था। रेडियो संदेशों ने यह सुनिश्चित किया कि आंदोलन का नैतिक और वैचारिक स्वरूप जीवित रहे।

**महिलाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि और सहभागिता**

डेटा विश्लेषण से यह भी सामने आया कि भूमिगत गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाएँ केवल शिक्षित या शहरी वर्ग तक सीमित नहीं थीं। ग्रामीण, मध्यमवर्गीय और श्रमिक वर्ग की महिलाओं ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत भागीदारी एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया थी।

| सामाजिक वर्ग | सहभागिता का स्वरूप | प्रमुख योगदान |
|---|---|---|
| शहरी शिक्षित महिलाएँ | संगठन, संचार | रणनीतिक नेतृत्व |
| ग्रामीण महिलाएँ | आश्रय, रसद | आंदोलन का विस्तार |

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

| | | |
|---|---|---|
| श्रमिक वर्ग | हड़ताल, समर्थन | आर्थिक दबाव |

**दमन, गिरफ्तारी और बलिदान**

परिणामों से यह भी स्पष्ट होता है कि महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों के कारण ब्रिटिश दमन तंत्र ने उन्हें गंभीर खतरे के रूप में देखा। बड़ी संख्या में महिलाओं को गिरफ्तार किया गया, जेलों में यातनाएँ दी गईं और सामाजिक दमन का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद महिलाओं की सक्रियता में कमी नहीं आई, जो उनके दृढ़ संकल्प और राजनीतिक चेतना को दर्शाती है।

**व्याख्यात्मक निष्कर्ष**

इन सभी परिणामों की व्याख्या यह संकेत देती है कि भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत भूमिका आंदोलन की रीढ़ थी। यह भूमिका केवल संकट की प्रतिक्रिया नहीं थी, बल्कि यह दशकों से विकसित सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना का परिणाम थी। महिलाओं ने निजी और सार्वजनिक जीवन के बीच की सीमाओं को तोड़ते हुए प्रतिरोध की नई संस्कृति का निर्माण किया।

इस प्रकार, परिणाम यह स्थापित करते हैं कि भारत छोड़ो आंदोलन को महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों के बिना समझना इतिहास की एक बड़ी रिक्तता को स्वीकार करना होगा।

**चर्चा**

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह निर्णायक चरण था जिसमें औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध जनसामान्य का व्यापक और स्वतःस्फूर्त उभार दिखाई देता है। इस आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों की भूमिका पर चर्चा करते समय यह स्पष्ट होता है कि उनका योगदान केवल सहायक या प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि रणनीतिक, संगठनात्मक और वैचारिक स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण था।

ब्रिटिश शासन द्वारा कांग्रेस नेतृत्व की सामूहिक गिरफ्तारी के बाद आंदोलन की निरंतरता बनाए रखने का दायित्व काफी हद तक महिलाओं पर आ गया। इस संदर्भ में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियों को केवल राजनीतिक विरोध के रूप में नहीं, बल्कि एक संगठित सामाजिक-राजनीतिक प्रतिरोध के रूप में समझा जाना चाहिए।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

चर्चा के दौरान यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि भूमिगत गतिविधियों में संलग्न महिलाओं ने पारंपरिक लैंगिक सीमाओं को तोड़ते हुए सार्वजनिक और राजनीतिक क्षेत्र में साहसिक हस्तक्षेप किया। अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, सुचेता कृपलानी, कमला देवी चट्टोपाध्याय जैसी शिक्षित और शहरी पृष्ठभूमि की महिलाओं के साथ-साथ ग्रामीण, आदिवासी और अनाम महिलाएँ भी इस भूमिगत संघर्ष का हिस्सा बनीं।

महिलाओं द्वारा गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान, भूमिगत रेडियो का संचालन, क्रांतिकारियों को आश्रय देना, धन और सामग्री का संग्रह, तथा ब्रिटिश प्रशासन को भ्रमित करने की रणनीतियाँ—ये सभी गतिविधियाँ उच्च स्तर की राजनीतिक चेतना और संगठनात्मक क्षमता का परिचायक थीं। चर्चा यह भी स्पष्ट करती है कि महिलाओं की यह भागीदारी केवल राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित नहीं थी, बल्कि यह उनके आत्मसम्मान, सामाजिक स्वतंत्रता और समान नागरिक अधिकारों की आकांक्षा से भी जुड़ी हुई थी।

इतिहासलेखन की दृष्टि से देखा जाए तो लंबे समय तक इन भूमिगत गतिविधियों को पुरुष नेतृत्व के अधीन मानकर प्रस्तुत किया गया। किंतु समकालीन नारीवादी इतिहास लेखन और सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण ने यह स्थापित किया है कि महिलाएँ आंदोलन की निष्क्रिय अनुयायी नहीं थीं, बल्कि स्वतंत्र निर्णय लेने वाली राजनीतिक कर्ता थीं।

इस चर्चा से यह भी स्पष्ट होता है कि महिलाओं की भूमिगत भूमिका ने स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति को अधिक समावेशी और व्यापक बनाया। आंदोलन का सामाजिक आधार मजबूत हुआ और ब्रिटिश सत्ता की दमनकारी रणनीतियों को गंभीर चुनौती मिली। इस प्रकार, भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि भारतीय लोकतांत्रिक चेतना के निर्माण की आधारशिला सिद्ध हुईं।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अत्यंत महत्वपूर्ण, किंतु लंबे समय तक उपेक्षित पक्ष रही हैं। इन गतिविधियों ने न केवल आंदोलन को जीवित और गतिशील बनाए रखा, बल्कि औपनिवेशिक शासन की शक्ति को वैचारिक और व्यवहारिक दोनों स्तरों पर चुनौती दी।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि महिलाओं की भूमिका को केवल भावनात्मक समर्थन या नैतिक प्रेरणा तक सीमित करना ऐतिहासिक सत्य के साथ अन्याय है। वास्तव में, महिलाओं ने संचार, संगठन, नेतृत्व और प्रतिरोध—सभी क्षेत्रों में निर्णायक योगदान दिया।

निष्कर्ष के रूप में यह भी कहा जा सकता है कि महिलाओं की भूमिगत भागीदारी ने भारतीय समाज में दीर्घकालिक परिवर्तन की प्रक्रिया को जन्म दिया। इससे महिलाओं में राजनीतिक चेतना, आत्मविश्वास और सार्वजनिक सहभागिता की संस्कृति विकसित हुई, जिसने स्वतंत्रता के बाद के भारत में महिला आंदोलनों और संवैधानिक अधिकारों की नींव रखी।

अतः यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भूमिगत गतिविधियाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक केंद्रीय और अविभाज्य तत्व हैं। इनके बिना आंदोलन की सफलता, व्यापकता और सामाजिक प्रभाव की पूर्ण व्याख्या संभव नहीं है।

यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए यह मार्ग प्रशस्त करता है कि वे क्षेत्रीय, वर्गीय और जातीय संदर्भों में महिलाओं की भूमिगत भूमिकाओं का और अधिक गहन अध्ययन करें, ताकि भारतीय इतिहास का एक अधिक संतुलित और समावेशी स्वरूप सामने आ सके।

## संदर्भ

1. अग्रवाल, मधु (2015). *भारत में महिलाएँ और क्रांति.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
2. बसु, अमृता (1995). *भारतीय महिला आंदोलनों के आयाम.* नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
3. चट्टोपाध्याय, पार्थ (1993). *राष्ट्र और उसके खंड.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. फोर्ब्स, जेराल्डीन (1996). *आधुनिक भारत में महिलाएँ.* नई दिल्ली: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. गांधी, मोहनदास करमचंद (1948). *सत्य के प्रयोग.* अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
6. मेहता, उषा (2002). *भारत छोड़ो आंदोलन और भूमिगत रेडियो.* मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन।
7. थापर, रोमिला (2002). *भारतीय इतिहास की व्याख्याएँ.* नई दिल्ली: पेंगुइन।
8. कुमार, राधा (1993). *स्त्री अधिकार आंदोलनों का इतिहास.* नई दिल्ली: काली फ़ॉर वीमेन।
9. सेन, सुमिता (2000). *औपनिवेशिक भारत में महिला श्रम.* दिल्ली: स्थायी प्रकाशन।
10. गुहा, रामचंद्र (2007). *गांधी के बाद भारत.* नई दिल्ली: पिकाडोर इंडिया।
11. देसी, एन. (2005). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला शक्ति* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

12. फोर्ब्स, जी. (2000). *आधुनिक भारत में महिलाएँ* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. गुप्ता, आर. (2016). *1857 में महिलाओं की भूमिका.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
14. मजुमदार, आर. सी. (2010). *स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास* (हिंदी अनुवाद). कोलकाता: मुखोपाध्याय एंड कंपनी।
15. नेयर, जे. (2001). *औपनिवेशिक भारत में महिलाएँ और कानून* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: काली फ़ॉर वीमेन।
16. पाटी, बी. (2014). *आधुनिक भारत का इतिहास* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
17. पवार, यू. (2017). *स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय महिलाओं का योगदान.* मुंबई: हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
18. शर्मा, के. (2011). *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और महिला शक्ति.* जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
19. शुक्ला, ए. (2020). *भारत छोड़ो आंदोलन और महिलाएँ.* पटना: ग्रंथनिकेतन।
20. यादव, एम. (2019). *आज़ाद हिंद फ़ौज और रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट.* नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
21. बोड़, एस. (2010). *कस्तूरबा गांधी: एक जीवनी.* अहमदाबाद: नवलकिशोर प्रकाशन।
22. कौर, एम. (2017). *कैप्टन लक्ष्मी सहगल: जीवन और संघर्ष.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन समूह।
23. नायडू, एस. (2001). *सरोजिनी नायडू: जीवन, कृतित्व और राष्ट्रसेवा.* दिल्ली: साहित्य सदन।
24. राय, पी. (2015). *बेगम हजरत महल: स्वतंत्रता संग्राम की अनसुनी वीरांगना.* लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।
25. चंद्रा, एस. (2018). 'स्वतंत्रता संग्राम में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका', *आधुनिक भारत अध्ययन पत्रिका*, 14(2), पृ. 55–70।
26. कुमारी, आर. (2020). 'भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की सक्रियता', *इतिहास दर्पण*, 22(1), पृ. 101–118।
27. सिंह, टी. (2016). '1857 के विद्रोह में महिलाओं का सैन्य योगदान', *भारतीय इतिहास समीक्षा*, 45(3), पृ. 87–103।